विषय-सूची

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
★	मङ्गलाचरण	१
★	शास्त्र के विषयों का संक्षिप्त अवलोकन	१-४
	प्रथम अध्याय	
१.	मोक्ष की प्राप्ति का उपाय-निश्चय मोक्षमार्ग	४
★	पहले सूत्र का सिद्धान्त	६
२.	निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	७
★	'तत्त्व' शब्द का मर्म	८
★	सम्यग्दर्शन की महिमा	८
★	सम्यग्दर्शन का बल	११
★	सम्यग्दर्शन के भेद तथा अन्य प्रकार	१२
★	सराग सम्यग्दृष्टि के प्रशमादि भाव	१३
★	सम्यग्दर्शन का विषय-लक्ष्य-स्वरूप	१३
	यह सूत्र निश्चयसम्यग्दर्शन के लिये है उसके शास्त्राधार	१४
३.	निश्चयसम्यग्दर्शन के उत्पत्ति की अपेक्षा से भेद	१७
★	तीसरे सूत्र का सिद्धान्त	१८
४.	तत्त्वों के नाम तथा स्वरूप	१९
★	चौथे सूत्र का सिद्धान्त	२१
५.	निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीति	२१
★	निक्षेप के भेदों की व्याख्या	२२
★	पाँचवें सूत्र का सिद्धान्त	२३
६.	निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने का उपाय	२४
★	प्रमाण, नय, युक्ति	२४-२५
★	अनेकान्त, एकान्त, सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त का स्वरूप तथा दृष्टान्त	२५-२६
★	सम्यक् और मिथ्या एकान्त का स्वरूप	२७
★	सम्यक् और मिथ्या एकान्त के दृष्टान्त	२७
★	प्रमाण और नय के प्रकार	२८
★	द्रव्यार्थिकनय और पर्यायार्थिकनय क्या है ?	२८
★	गुणार्थिकनय क्यों नहीं ?	२९

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
★	नयों के नाम	२९
★	सम्यग्दृष्टि के नाम, मिथ्यादृष्टि के नाम	२९
★	आदरणीय निश्चयनय है - ऐसी श्रद्धा करना चाहिए	३०
★	व्यवहार और निश्चय का फल	३०
★	शास्त्रों में दोनों नयों को ग्रहण करना कहा है, सो कैसे ?	३०
★	जैनशास्त्रों का अर्थ करने की पद्धति	३०
★	निश्चयाभासी और व्यवहाराभासी	३१
★	नय के दो प्रकार (रागसहित और रागरहित)	३१
★	प्रमाण-सप्तभङ्गी और नय-सप्तभङ्गी	३२
	वीतरागी-विज्ञान का निरूपण	३२
★	मिथ्यादृष्टि के नय, सम्यग्दृष्टि के नय, नीति	३२-३३
★	निश्चय और व्यवहारनय का दूसरा अर्थ	३३
★	आत्मा का स्वरूप समझने के लिये नय-विभाग	३४
★	निश्चयनय और द्रव्यार्थिकनय तथा व्यवहारनय और पर्यायार्थिकनय के अर्थ, भिन्न-भिन्न भी होते हैं	३४
★	छट्ठे सूत्र का सिद्धान्त	३५
७.	निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य (अप्रधान) उपाय	३५
★	निर्देश स्वामित्वादि	३५
★	जिनबिम्बदर्शन इत्यादि सम्यग्दर्शन के कारणों सम्बन्धी चर्चा	३७
८.	और भी अन्य अमुख्य उपाय	३९
★	सत्, संख्या, क्षेत्रादि की व्याख्या	३९
★	सत् और निर्देश में अन्तर	४०
★	'सत्' शब्द के प्रयोग का कारण	४१
★	संख्या और विधान में अन्तर	४१

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
★	क्षेत्र और अधिकरण में अन्तर वगैरह	४१
★	काल और स्थिति में अन्तर	४२
★	'भाव' शब्द का निक्षेप के सूत्र में कथन होने पर भी यहाँ किसलिये कहा? विस्तृत वर्णन का प्रयोजन	४२
★	भाव सम्बन्धी विशेष स्पष्टीकरण	४३
★	सूत्र ४ से ८ तक का तात्पर्यरूप सिद्धान्त	४३
९.	सम्यग्ज्ञान के भेद-मतिज्ञानादि पाँचों प्रकार का स्वरूप	४४
★	नववें सूत्र का सिद्धान्त	४५
१०.	कौन से ज्ञान प्रमाण हैं	४५
★	सूत्र ९-१० का सिद्धान्त	४६
११.	परोक्ष प्रमाण के भेद	४६
★	क्या सम्यक् मतिज्ञान यह जान सकता है कि अमुक जीव भव्य है या अभव्य?	४७
★	मति-श्रुतिज्ञान को परोक्ष कहा उसका विशेष समाधान	४९
१२.	प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	५०
१३.	मतिज्ञान के नाम	५०
१४.	मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त	५२
★	मतिज्ञान में ज्ञेय पदार्थ और प्रकाश को भी निमित्त क्यों नहीं कहा?	५३
★	निमित्त और उपादान	५५
१५.	मतिज्ञान के क्रम के भेद-अवग्रह, ईहादि का स्वरूप	५५
१६.	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	५६
★	बहु, बहुविधादि बारह भेद की व्याख्या	५७
★	प्रत्येक इन्द्रिय द्वारा होनेवाले इन बारह प्रकार के मतिज्ञान का स्पष्टीकरण,	५९
★	शङ्का-समाधान	६१ से ६४
१७.	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ भेद किसके हैं?	६४
१८.	अवग्रह ज्ञान में विशेषता	६५
★	अर्थावग्रह-व्यञ्जनावग्रह के दृष्टान्त	६५
★	अव्यक्त-व्यक्त का अर्थ	६६
★	अव्यक्त और व्यक्तज्ञान अर्थात् व्यञ्जनावग्रह-अर्थावग्रह	६६
★	ईहा, अवाय, धारणा का विशेष स्वरूप	६६-६७
★	एक के बाद दूसरा ज्ञान होता ही है या नहीं?	६७
★	ईहा ज्ञान सत्य है?	६७
★	'धारणा' और 'संस्कार' के बारे में स्पष्टीकरण	६७
★	चार भेदों की विशेषता	६८
१९.	व्यञ्जनावग्रहज्ञान नेत्र और मन से नहीं होता	६९
२०.	श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	६९
★	श्रुतज्ञान की उत्पत्ति के दृष्टान्त	६९
★	अक्षरात्मक, अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान	७०
★	श्रुतज्ञानी उत्पत्ति में मतिज्ञान निमित्तमात्र	७०
★	मतिज्ञान के समान ही श्रुतज्ञान क्यों नहीं?	७०
★	श्रुतज्ञान साक्षात् मतिज्ञानपूर्वक और परम्परा मतिपूर्वक	७०
★	भावश्रुत और द्रव्यश्रुत	७१
★	प्रमाण के दो प्रकार, 'श्रुत' के अर्थ	७१
★	बारह अङ्ग, चौदह पूर्व	७२
★	मति और श्रुतज्ञान के बीच का भेद	७२
★	विशेष स्पष्टीकरण	७३
★	सूत्र ११ से २० तक का सिद्धान्त	७४
२१.	अवधिज्ञान का वर्णन - भव और गुण अपेक्षा से	७४
२२.	क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	७५
★	अनुगामी आदि छह भेद का वर्णन	७५
	द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव अपेक्षा से अवधिज्ञान का विषय	७६
★	क्षयोपशम का अर्थ	७७
★	सूत्र २१-२२ का सिद्धान्त	७७
२३.	मन:पर्यय ज्ञान के भेद	७८
२४.	ऋजुमति और विपुलमति में अन्तर	८०
२५.	अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	८०

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
२६.	मति-श्रुतज्ञान का विषय	८१
२७.	अवधिज्ञान का विषय	८२
२८.	मन:पर्ययज्ञान का विषय	८२
☆	सूत्र २७-२८ का सिद्धान्त	८२
२९.	केवलज्ञान का विषय	८३
☆	केवली भगवान के एक ही ज्ञान होता है या पाँचों	८४
☆	सूत्र २९ का सिद्धान्त	८४
३०.	एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	८४
☆	सूत्र ९ से ३० तक का सिद्धान्त	८५
३१.	मतिश्रुत और अविधज्ञान में मिथ्यात्व भी होता है	८६
३२.	मिथ्यादृष्टि जीव के ज्ञान को मिथ्या क्यों कहा ?	८७
☆	कारणविपरीतता, स्वरूपविपरीतता, भेदाभेदविपरीतता इन तीनों को दूर करने का उपाय	८८
☆	सत् असत्, ज्ञान का कार्य, विपरीत ज्ञान के दृष्टान्त	९०
३३.	प्रमाण का स्वरूप कहा, श्रुतज्ञान के अंशरूपनय का स्वरूप कहते हैं	९२
☆	अनेकान्त, स्याद्वाद और नय की व्याख्या	९२
☆	नैगमादि सात नयों का स्वरूप	९२-९४
☆	नय के तीन प्रकार (शब्द-अर्थ और ज्ञाननय)	९४
☆	श्रीमद् राजचन्द्रजी ने आत्मा के सम्बन्ध में इन सात नयों को चौदह प्रकार से कैसे उत्तम ढंग से अवतरित किये हैं ?	९४-९५
☆	वास्तविकभाव लौकिकभावों से विरुद्ध	९५
☆	पाँच प्रकार से जैनशास्त्रों के अर्थ समझाने की रीति	९५
☆	नयों के संक्षेप स्वरूप, जैन नीति तथा नयों की सुलझन	९७-९८
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट-१	
☆	सम्यग्दर्शन के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य	१००
☆	सम्यग्दर्शन की आवश्यकता, सम्यग्दर्शन क्या है	१००
☆	श्रद्धा-गुण की मुख्यता से निश्चयसम्यग्दर्शन	१००
☆	ज्ञान-गुण की मुख्यता से निश्चयसम्यग्दर्शन	१०१
☆	चारित्र-गुण की मुख्यता से निश्चयसम्यग्दर्शन	१०३
☆	अनेकान्त स्वरूप	१०४
☆	सम्यग्दर्शन सभी सम्यग्दृष्टियों के एक समान	१०४
☆	सम्यग्ज्ञान सभी सम्यग्दृष्टियों के सम्यक्त्व की अपेक्षा से समान है	१०४
☆	अवस्था में विकास का कम बढ़ होना वगैरह अपेक्षा से समान नहीं	१०४
☆	सम्यक्चारित्र में भी अनेकान्त	१०४
☆	दर्शन (श्रद्धा) ज्ञान, चारित्र इन तीनों गुणों की अभेददृष्टि से निश्चयसम्यग्दर्शन की व्याख्या	१०५
☆	निश्चयसम्यग्दर्शन का चारित्र के भेदों की अपेक्षा से कथन	१०५
☆	निश्चयसम्यग्दर्शन के बारे में प्रश्नोत्तर	१०५
☆	व्यवहारसम्यग्दर्शन की व्याख्या	१०६
☆	व्यवहाराभास सम्यग्दर्शन को कभी व्यवहार सम्यग्दर्शन भी कहते हैं	१०७
☆	सम्यग्दर्शन के प्रगट करने का उपाय	१०७
☆	निर्विकल्प अनुभव का प्रारम्भ	१०९
☆	सम्यग्दर्शन पर्याय है तो भी उसे गुण कैसे कहते हैं	१०९
☆	सभी सम्यग्दृष्टियों का सम्यग्दर्शन समान है	११०
☆	सम्यग्दर्शन के भेद क्यों कहे गये हैं ?	११०
☆	सम्यग्दर्शन की निर्मलता	१११
☆	सम्यक्त्व की निर्मलता में पाँच भेद किस अपेक्षा से	११२

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
☆	सम्यग्दृष्टि जीव अपने को सम्यक्त्व प्रगट होने की बात श्रुतज्ञान द्वारा बराबर जानते हैं।	११२
☆	सम्यग्दर्शन सम्बन्धी कुछ प्रश्नोत्तर	११७
☆	ज्ञान-चेतना के विधान में अन्तर क्यों हैं ?	११९
	ज्ञान-चेतना के सम्बन्ध में विचारणीय नव विषय	१२०
☆	अक्रमिकविकास और क्रमिक विकास का दृष्टान्त	१२१
☆	इस विषय के प्रश्नोत्तर और विस्तार	१२३
☆	सम्यग्दर्शन और ज्ञान-चेतना में अन्तर	१२८
☆	चारित्र न पले फिर भी उसकी श्रद्धा करनी चाहिए	१२९
☆	निश्चयसम्यग्दर्शन का दूसरा अर्थ	१२९
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट - २	
☆	निश्चयसम्यग्दर्शन	१३१
☆	निश्चयसम्यग्दर्शन क्या है और उसे किसका अवलम्बन	१३१
☆	भेद-विकल्प से सम्यग्दर्शन नहीं होता	१३२
☆	विकल्प से स्वरूपानुभव नहीं हो सकता	१३३
☆	सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान का सम्बन्ध किसके साथ	१३४
☆	श्रद्धा-ज्ञान सम्यक् कब हुए	१३४
☆	सम्यग्दर्शन का विषय, मोक्ष का परमार्थ-कारण	१३५
☆	सम्यग्दर्शन ही शान्ति का उपाय है सम्यग्दर्शन ही संसार का नाशक है	१३६
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट - ३	
☆	जिज्ञासु को धर्म किस प्रकार करना	१३७
☆	पात्र जीव का लक्षण	१३७
☆	सम्यग्दर्शन के उपाय के लिये ज्ञानियों के द्वारा बताई गई क्रिया	१३७
☆	श्रुतज्ञान किसे कहना	१३८
☆	श्रुतज्ञान का वास्तविक लक्षण-अनेकान्त	१३८
☆	भगवान भी दूसरे का कुछ नहीं कर सके	१३९
☆	प्रभावना का सच्चा स्वरूप	१३९
☆	सच्ची दया (अहिंसा)	१३९
☆	आनन्दकारी भावनावाला क्या करे	१३९
☆	श्रुतज्ञान का अवलम्बन ही प्रथम क्रिया है	१४०
☆	धर्म कहाँ और कैसे ?	१४१
☆	सुख का उपाय ज्ञान और सत् समागम	१४२
☆	जिस ओर की रुचि उसी का रटन	१४३
☆	श्रुतज्ञान के अवलम्बन का फल-आत्मानुभव	१४५
☆	सम्यग्दर्शन होने से पूर्व	१४५
☆	धर्म के लिये प्रथम क्या करें	१४७
☆	सुख का मार्ग, विकार का फल, असाध्य, शुद्धात्मा	१४७-१४८
☆	धर्म की रुचिवाले जीव कैसे होते हैं ?	१४८
☆	उपादान-निमित्त और कारण-कार्य	१४९
☆	अन्तरङ्ग-अनुभव का उपाय-ज्ञान की क्रिया	१४९
☆	ज्ञान में भव नहीं है	१५०
☆	इस प्रकार अनुभव में आनेवाला शुद्धात्मा कैसा है ?	१५०
☆	निश्चय-व्यवहार	१५१
☆	सम्यग्दर्शन होने पर क्या होता है	१५१
☆	बारम्बार ज्ञान में एकाग्रता का अभ्यास	१५१
☆	अन्तिम अभिप्राय	१५३
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट-४	
☆	तत्त्वार्थ श्रद्धान को सम्यग्दर्शन का लक्षण कहा है, उस लक्षण में अव्याप्ति आदि दोष का परिहार	१५४-१६५
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट - ५	
☆	केवलज्ञान [केवली का ज्ञान] का स्पष्टरूप और उनके शास्त्रों का आधार	१६६-१७७
	अध्याय दूसरा	
१.	जीव के असाधारण भाव	१७८
☆	औपशमिकादि पाँच भावों की व्याख्या	१७८
☆	यह पाँच भाव क्या बतलाते हैं ?	१७९
☆	उनके कुछ प्रश्नोत्तर	१८०
☆	औपशमिकभाव कब होता है ?	१८१

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
☆	उनकी महिमा	१८२
☆	पाँच भावों के सम्बन्ध में कुछ स्पष्टीकरण	१८३
☆	जीव का कर्त्तव्य	१८५
☆	पाँच भावों के सम्बन्ध में कुछ विशेष स्पष्टीकरण	१८६
☆	इस सूत्र में नय-प्रमाण की विवक्षा	१८६
२.	भावों के भेद	१८७
३.	औपशमिक भाव के दो भेद	१८७
☆	क्षायिकभाव के ९ भेद	१८८
५.	क्षायोपशमिक भाव के १८ भेद	१८९
६.	औदयिक भाव के २१ भेद	१९०
७.	पारिणामिकभाव के तीन भेद	१९१
☆	उनके विशेष स्पष्टीकरण	१९२
☆	अनादि अज्ञानी के कौन से भाव कभी नहीं हुए?	१९३
☆	औपशमिकादि तीन भाव कैसे प्रगट होते हैं?	१९३
☆	कौन से भाव बन्धरूप हैं?	१९४
८.	जीव का लक्षण	१९४
☆	आठवें सूत्र का सिद्धान्त	१९५
९.	उपयोग के भेद	१९६
☆	साकार-निराकार	१९७
☆	दर्शन और ज्ञान के बीच का भेद	१९८
☆	उस भेद की अपेक्षा और अभेद की अपेक्षा से दर्शनज्ञान का अर्थ	१९९
१०.	जीव के भेद	२००
☆	संसार का अर्थ	२००
☆	द्रव्यपरिवर्तन, क्षेत्रपरिवर्तन, काल परिवर्तन, भावपरिवर्तन का स्वरूप	२०१-२०५
☆	भावपरिवर्तन का कारण मिथ्यात्व है	२०५
☆	मानव-भव की सार्थकता के लिये विशेष	२०६
११.	संसारी जीवों के भेद	२०७
१२.	संसारी जीवों के अन्य प्रकार से भेद (त्रस-स्थावर)	२०९
१३.	स्थावर जीवों के भेद	२०९
	इन पृथ्वी आदिकों के चार-चार भेद	२१०
१४.	त्रस जीवों के भेद	२१०
१५.	इन्द्रियों की संख्या	२११
१६.	इन्द्रियों के मूल-भेद	२१२
१७.	द्रव्येन्द्रिय का स्वरूप	२१२
१८.	भावेन्द्रिय का स्वरूप (लब्धि-उपयोग)	२१३
	इस सूत्र का सिद्धान्त	२१४
१९.	पाँच इन्द्रियों के नाम और क्रम	२१५
२०.	इन्द्रियों के विषय	२१५
२१.	मन का विषय	२१६
२२.	इन्द्रियों के स्वामी	२१७
२३.	इन्द्रियों के स्वामी और क्रम	२१७
२४.	सैनी किसे कहते हैं?	२१८
२५.	विग्रहगतिवान जीव को कौन-सा योग है?	२१८
२६.	विग्रहगति में जीव और पुद्गलों का गमन कैसे होता है?	२१८
२७.	मुक्त जीवों की गति कैसी होती है?	२१९
२८.	संसारी जीवों की गति और उनका समय	२२०
२९.	अविग्रहगति का समय	२२१
३०.	अविग्रहगति में आहारक अनाहारक की व्यवस्था	२२१
३१.	जन्म के भेद	२२२
३२.	योनियों के भेद	२२३
३३.	गर्भ-जन्म किसे कहते हैं?	२२४
३४.	उपपादजन्म किसे कहते हैं?	२२५
३५.	सम्मूर्च्छन जन्म किसके होता है?	२२५
३६.	शरीर के नाम तथा भेद	२२५
३७.	शरीरों की सूक्ष्मता का वर्णन	२२६
३८.	पहिले-पहिले शरीर की अपेक्षा आगे-आगे के शरीरों के प्रदेश	२२६-२२७
३९.	थोड़े होंगे या अधिक	२२७
४०.	तैजस-कार्माण शरीर की विशेषता	२२७
४१.	तैजस-कार्माण शरीर की अन्य विशेषता	२२७
४२.	वे शरीर संसारी जीवों के अनादि काल से हैं	२२८
४३.	एक जीव के एक साथ	

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	कितने शरीरों का सम्बन्ध ?	२२९
४४.	कार्मण शरीर की विशेषता	२२९
४५.	औदारिक-शरीर का लक्षण	२३०
४६.	वैक्रियिक-शरीर का लक्षण	२३१
४७.	देव और नारकियों के अतिरिक्त दूसरों के वैक्रियिक शरीर होता है या नहीं ?	२३१
४८.	वैक्रियिक के अतिरिक्त किसी अन्य शरीर को भी लब्धि का निमित्त है ?	२३१
४९	आहारक शरीर का स्वामी तथा उसका लक्षण	२३२
	आहारक शरीर का विस्तार से वर्णन	२३२-२३३
५०.	लिङ्ग-वेद के स्वामी	२३३
५१.	देवों के लिङ्ग	२३४
५२.	अन्य कितने लिङ्गवाले हैं ?	२३४
५३.	किनकी आयु अपवर्तन (अकाल मृत्यु) रहित है ?	२३५
☆	**अध्याय २ का उपसंहार**	**२३६**
☆	पारिणामिकभाव के सम्बन्ध में	२३७
☆	धर्म करने के लिये पाँच भावों का ज्ञान उपयोगी है ?	२३८
☆	उपादान और निमित्त कारण के सम्बन्ध में	२३८
☆	पाँच भावों के साथ इस अध्याय के सूत्रों के सम्बन्ध का स्पष्टीकरण	२४१
☆	निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध	२४६
☆	तात्पर्य	२४३
	अध्याय तीसरा	
☆	भूमिका	२४७
☆	अधोलोक का वर्णन	२४८
१.	सात नरक-पृथिवियाँ	२४८
२.	सात पृथिवियों के बिलों की संख्या	२४९
☆	नरक गति होने का प्रमाण	२४९
३.	नारकियों के दुखों का वर्णन	२५०
४.	नारकी जीव एक-दूसरे को दुःख देते हैं	२५१
५.	विशेष दुःख	२५१
६.	नारकों की उत्कृष्ट आयु का प्रमाण	२५२

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
☆	सम्यग्दृष्टियों को नरक में कैसा दुःख होता है ?	२५३
७.	मध्यलोक का वर्णन, कुछ द्वीप समुद्रों के नाम	२५५
८.	द्वीप और समुद्रों का विस्तार और आकार	२५६
९.	जम्बूद्वीप का विस्तार और आकार	२५६
१०.	उसमें सात क्षेत्रों के नाम	२५६
११.	सात विभाग करनेवाले छह पर्वतों के नाम	२५७
१२.	कुलाचल पर्वतों का रङ्ग	२५७
१३.	कुलाचलों का विशेष स्वरूप	२५७
१४.	कुलाचलों के ऊपर स्थित सरोवरों के नाम	२५७
१५.	प्रथम सरोवर की लम्बाई-चौड़ाई	२५७
१६.	प्रथम सरोवर की गहराई	२५८
१७.	उसके मध्य में क्या है ?	२५८
१८.	महापद्मादि सरोवर तथा उनमें कमलों का प्रमाण ह्रदों का विस्तार आदि	२५८
१९.	छह कमलों में रहनेवाली छह देवियाँ	२५९
२०.	चौदह महानदियों के नाम	२५९
२१.	नदियों के बहने का क्रम	२५९
२२.	इन चौदह महानदियों की सहायक नदियाँ	२६०
२३.	भरत क्षेत्र का विस्तार	२६०
२४.	आगे के क्षेत्र और पर्वतों का विस्तार	२६१
२५.	विदेह क्षेत्र के आगे के पर्वत क्षेत्रों का विस्तार	२६१
२६.	भरत और ऐरावत क्षेत्र में कालचक्र का परिवर्तन	२६२-२६३
२७.	भरत-ऐरावत के मनुष्यों की आयु तथा ऊँचाई तथा मनुष्यों का आहार	२६३
२८.	अन्य भूमियों की काल-व्यवस्था	२६३
२९.	हैमवतक इत्यादि क्षेत्रों में आयु	२६३
३०.	हैरण्यवतकादि क्षेत्रों में आयु	२६४
३१.	विदेह क्षेत्र में आयु की व्यवस्था	२६४
३२.	भरतक्षेत्र का विस्तार दूसरी तरह से	२६४
३३.	घातकी खण्ड का वर्णन	२६५

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
३४.	पुष्करार्ध द्वीप का वर्णन	२६५
३५.	मनुष्य क्षेत्र	२६५
३६.	मनुष्यों के भेद (आर्य-म्लेच्छ)	२६५
☆	ऋद्धि प्राप्त आर्य की आठ प्रकार की तथा अनेक प्रकार रूढ़ियों का वर्णन	२६६-२७३
☆	अनऋद्धि प्राप्त आर्य	२७३
☆	म्लेच्छ	२७४
३७.	कर्मभूमि का वर्णन	२७५
३८.	मनुष्यों की उत्कृष्ट तथा जघन्य आयु	२७५
३९.	तिर्यञ्चों की आयु स्थिति	२७६
☆	क्षेत्र के नाप का कोष्टक	२७७
☆	उत्तरकुरु, देवकुरु, लवणसमुद्र, घातकी द्वीप, कालोदधिसमुद्र, पुष्करद्वीप, नरलोक, दूसरे द्वीप, समुद्र, कर्मभूमि, भोगभूमि और कर्मभूमि जैसा क्षेत्र	२७८-२८०
	अध्याय चौथा	
☆	भूमिका	२८१
१.	देवों के भेद	२८१
२.	भवनत्रिक देवों में लेश्या का विभाग	२८१
३.	चार निकाय के देवों के प्रभेद	२८१
४.	चार प्रकार के देवों के सामान्य भेद	२८३
५.	व्यन्तर, ज्योतिषी देवों में इन्द्र आदि भेदों की विशेषता	२८४
६.	देवों में इन्द्रों की व्यवस्था	२८४
७-९	देवों का काम-सेवन सम्बन्धी वर्णन	२८५
१०.	भवनवासी देवों का भेद	२८७
११.	व्यन्तर देवों के आठ भेद	२८९
१२.	ज्योतिषी देवों के पाँच भेद	२९०
१३.	ज्योतिषी देवों के विशेष वर्णन	२९०
१४.	उससे होनेवाला काल-विभाग	२९०
१५.	अढ़ाई द्वीप के बाहर ज्योतिषी देव	२९१
१६.	वैमानिक देवों का वर्णन	२९१
१७.	वैमानिक देवों के भेद	२९१
१८.	कल्पों की स्थिति का क्रम	२९२
१९.	वैमानिक देवों के रहने का स्थान	२९२
२०.	वैमानिक देवों में उत्तरोत्तर अधिकता	२९३
२१.	वैमानिक देवों में उत्तरोत्तर हीनता	२९४
☆	शुभभाव के कारण कौन जीव किस स्वर्ग में उत्पन्न होता है उसका स्पष्टीकरण	२९४-२९५
☆	देव शरीर से छूटकर कौन-सी पर्याय धारण करता है उसका वर्णन इस सूत्र का सिद्धान्त	२९६
२२.	वैमानिक देवों में लेश्या का वर्णन	२९८
२३-२४	कल्पसंज्ञा कहाँ तक, लौकान्तिक देव	२९८
२५.	लौकान्तिक देवों के नाम	२९९
२६.	अनुदिश और अनुत्तरवासी देवों के अवतार का नियम	२९९
२७.	तिर्यञ्च कौन है ?	३००
२८.	भवनवासी देवों की उत्कृष्ट आयु	३०१
२९.	वैमानिक देवों की उत्कृष्ट आयु	३०१
३०-३१	सानत्कुमारादि की आयु	३०२
३२.	कल्पातीत देवों की आयु	३०२
३३-३४	स्वर्गों की जघन्य आयु	३०३
३५-३६	नारकियों की जघन्य आयु	३०३
३७.	भवनवासी देवों की जघन्य आयु	३०४
३८.	व्यन्तर देवों की जघन्य आयु	३०४
३९.	व्यन्तर देवों की उत्कृष्ट आयु	३०४
४०.	ज्योतिषी देवों की उत्कृष्ट आयु	३०४
४१.	ज्योतिषी देवों की जघन्य आयु	३०४
४२.	लौकान्तिक देवों की आयु, उपसंहार	३०४
☆	सप्तभङ्गी [स्यात् अति-नास्ति]	३०५
☆	साधक जीवों को उसके ज्ञान से लाभ	३०६
☆	अध्याय २ से ४ तक यह अस्ति-नास्ति स्वरूप कहाँ-कहाँ बताया है उसका वर्णन	३०७-३०८
☆	सप्तभङ्गी के शेष पाँच भङ्ग का वर्णन	३०९
☆	जीव में अवतरित सप्तभङ्गी	३०९
☆	उसमें लागू होनेवाले नय	३०९
☆	प्रमाण, निक्षेप, स्वज्ञेय, अनेकान्त	३१०
☆	सप्तभङ्गी और अनेकान्त	३११
☆	नय, अध्यात्म के नय, उपचार नय	३१२-१३

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
☆	सम्यग्दृष्टि का और मिथ्यादृष्टि का ज्ञान	३१४
☆	अनेकान्त क्या बतलाता है ?	३१४
☆	शास्त्रों का अर्थ करने की पद्धति	३१५
☆	मुमुक्षुओं का कर्त्तव्य	३१६
☆	देवगति की व्यवस्था (भवनत्रिक)	३१७
☆	देवगति की व्यवस्था (वैमानिक)	३२०
	अध्याय पाँचवाँ	
☆	भूमिका	३२१
१.	अजीव तत्त्व का वर्णन	३२२
२.	ये अजीवकाय क्या है ?	३२३
३.	द्रव्य में जीव की गिनती	३२४
४.	पुद्गलद्रव्य से अतिरिक्त द्रव्यों की विशेषता 'नित्य' और 'अवस्थित' का विशेष स्पष्टीकरण	३२५
५.	एक पुद्गल द्रव्य का ही रूपित्व बतलाते हैं	३२६
६.	धर्मादि द्रव्यों की संख्या	३२७
७.	इनका गमन रहितत्व	३२८
८.	धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और एक जीवद्रव्य के प्रदेशों की संख्या	३२९
९.	आकाश के प्रदेश	३३०
१०.	पुद्गल के प्रदेशों की संख्या	३३०
११.	अणु एक प्रदेशी है द्रव्यों के अनेकान्त स्वरूप का वर्णन	३३१
१२.	समस्त द्रव्यों के रहने का स्थान	३३३
१३.	धर्म-अधर्म द्रव्य का अवगाहन	३३५
१४.	पुद्गल का अवगाहन	३३५
१५.	जीवों का अवगाहन	३३५
१६.	जीवों का अवगाहन लोक के असंख्यात भाग में कैसे ?	३३६
१७.	धर्म और अधर्म द्रव्य का जीव और पुद्गल के साथ का विशेष सम्बन्ध	३३७
१८.	आकाश और दूसरे द्रव्यों के साथ का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध	३३९
१९.	पुद्गल द्रव्य का जीव के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध	३३९
२०.	पुद्गल का जीव के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध	३४०
२१.	जीव का उपकार	३४१
२२.	कालद्रव्य का उपकार	३४३
	उपकार के सूत्र १७ से २२ तक के सिद्धान्त	३४४
२३.	पुद्गल द्रव्य का लक्षण	३४४
२४.	पुद्गल की पर्याय के अनेक भेद	३४६
२५.	पुद्गल के भेद	३४९
२६.	स्कन्धों की उत्पत्ति का कारण	३५०
२७.	अणु की उत्पत्ति का कारण	३५०
२८.	चक्षुगोचर स्कन्ध की उत्पत्ति का कारण	३५०
२९.	द्रव्यों का सामान्य लक्षण	३५१
३०.	सत् का लक्षण	३५४
☆	उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य की व्याख्या	३५४
☆	राग-द्वेष के कारण में अज्ञानी का मत	३५६
☆	अज्ञानी को सत्यमार्ग का उपदेश	३५६
☆	छहों द्रव्य अपने-अपने स्वरूप में सदा परिणमते हैं, कोई द्रव्य किसी का कभी भी प्रेरक नहीं है, वस्तु की प्रत्येक अवस्था भी 'स्वतः सिद्ध असहाय'	३५७
☆	राग-द्वेष परिणाम का मूल प्रेरक कौन ?	३५७
३१.	नित्य का लक्षण	३५८
३२.	एक वस्तु में दो विरुद्ध धर्म सिद्ध करने की रीति	३५८
☆	अर्पित-अनर्पित के द्वारा (मुख्य-गौण के द्वारा) अनेकान्त स्वरूप का कथन	३५९
☆	विकार साक्षेप है कि निरपेक्ष ?	३६२
☆	अनेकान्त का प्रयोजन	३६२
☆	एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ भी कर सकता है इस मान्यता में आनेवाले दोषों का वर्णन; संकर, व्यतिकर, अधिकरण, परस्पराश्रय, संशय, अनवस्था अप्रतिपत्ति, विरोध, अभाव	३६३-३६५
☆	मुख्य और गौण का विशेष	३६५
३३.	परमाणुओं में बन्ध होने का कारण	३६६

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
३४.	परमाणुओं में बन्ध कब नहीं होता?	३६७
	इस सूत्र का सिद्धान्त	३६७
३५.	परमाणुओं में बन्ध कब नहीं होता?	३६८
३६.	परमाणुओं में बन्ध कब होता है?	३६९
३७.	दो गुण अधिक के साथ मिलने पर नई व्यवस्था कैसी होती है?	३६९
३८.	द्रव्य का दूसरा लक्षण (गुण-पर्याय की व्याख्या)	३६९
३९-४०	काल भी द्रव्य है - व्यवहार काल का भी वर्णन	३७१
४१.	गुण का वर्णन	३७२
	इस सूत्र का सिद्धान्त	३७२
४२.	पर्याय का लक्षण - इस सूत्र का सिद्धान्त	३७३
	उपसंहार	
☆	छहों द्रव्यों को लागू होनेवाला स्वरूप, द्रव्यों की संख्या, नाम	३७४
☆	अजीव का स्वरूप, धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाश, काल, पुद्गल	३७५-७६
☆	स्याद्वाद सिद्धान्त-अस्तिकाय	३७७-७८
☆	जीव और पुद्गलद्रव्य की सिद्धि १-२	३७८
☆	उपादान-निमित्त सम्बन्धी सिद्धान्त	३८२
☆	उपरोक्त सिद्धान्त के आधार से जीव, पुद्गल के अतिरिक्त चार द्रव्यों की सिद्धि	३८३
☆	आकाश द्रव्य की सिद्धि	३८४
☆	काल द्रव्य की सिद्धि	३८५
☆	अधर्मास्तिकाय-धर्मास्तिकाय की सिद्धि ५-६	३८५
☆	इन छह द्रव्यों के एक ही जगह होने की सिद्धि	३८६
☆	अन्य प्रकार के छह द्रव्यों के अस्तित्व की सिद्धि विस्तार से १-२ जीवद्रव्य और पुद्गलद्रव्य आदि	३८६
☆	छह द्रव्य सम्बन्धी कुछ जानकारी	३८९
☆	टोपी के दृष्टान्त से छह द्रव्यों की सिद्धि	३९०
☆	मनुष्य शरीर के दृष्टान्त से छह द्रव्यों की सिद्धि	३९१
☆	कर्मों के दृष्टान्त से छह द्रव्यों की सिद्धि	३९३
☆	द्रव्यों की स्वतन्त्रता	३९३
☆	उत्पाद-व्यय-ध्रुव द्रव्य की शक्ति (गुण)	३९३
☆	अस्तित्व आदि सामान्य गुणों की व्याख्या	३९४
☆	छह कारण (कारण)	३९५
☆	कार्य कारण, उपादान, योग्यता, निमित्त	३९६
☆	उपादान कारण और निमित्त की उपस्थिति का क्या नियम है? बनारसी विलास में कथित दोहा से	३९७
☆	राग-द्वेष के प्रेरक; पुद्गल कर्म की जोरावरी से राग-द्वेष करना पड़ता है?	३९९
☆	निमित्त के दो भेद किस अपेक्षा से हैं? निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध किसे कहते हैं?	३९९-४००
☆	निमित्त-नैमित्तिक के दृष्टान्त	४००
☆	प्रयोजनभूत	४०१
	अध्याय छठवाँ	
☆	भूमिका	४०३
☆	सात तत्त्वों की सिद्धि	४०३
☆	सात तत्त्वों का प्रयोजन	४०४
☆	तत्त्वों की श्रद्धा कब हुई कही जाय?	४०५
१.	आस्रव में योग के भेद और उसका स्वरूप	४०६
२.	आस्रव का स्वरूप	४०७
३.	योग के निमित्त से आस्रव के भेद	४०९
☆	पुण्यास्रव और पापास्रव के सम्बन्ध में भूल	४०९
☆	शुभयोग और अशुभयोग के अर्थ	४१०
☆	आस्रव में शुभ और अशुभ भेद क्यों?	४१०
☆	शुभभावों से ७ या ८ कर्म बँधते हैं तो शुभ परिणाम को पुण्यास्रव का कारण क्यों कहा?	४११
☆	कर्मों के बँधने की अपेक्षा से शुभ-अशुभ योग ऐसे भेद नहीं है	४११
☆	शुभभाव से पाप की निर्जरा नहीं होती	४१२
☆	इस सूत्र का सिद्धान्त	४१२

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
४.	आस्रव के दो भेद	४१२
★	कर्म-बन्ध के चार भेद	४१३
५.	साम्परायिक आस्रव के ३९ भेद	४१३
★	२५ प्रकार की क्रियाओं के नाम और अर्थ	४१४
६.	आस्रव में हीनाधिकता का कारण	४१७
७.	अधिकरण (निमित्त कारण) के भेद	४१७
८.	जीव अधिकरण के भेद (१०८ भेद का अर्थ)	४१८
९.	अजीवाधिकरण आस्रव के भेद	४१९
१०.	ज्ञान-दर्शनावरण कर्म के आस्रव का कारण	४२०
११.	असाता वेदनीय के आस्रव के कारण	४२३
★	इस सूत्र का सिद्धान्त	४२४
१२.	साता वेदनीय के आस्रव का कारण	४२४
१३.	अनन्त संसार के कारणरूप दर्शनमोह के आस्रव के कारण	४२६
★	केवली भगवान् के अवर्णवाद	४२७
★	श्रुत के अवर्णवाद का स्वरूप	४३१
★	संघ के अवर्णवाद का स्वरूप	४३१
★	धर्म के अवर्णवाद का स्वरूप	४३२
★	देव के अवर्णवाद का स्वरूप	४३२
★	इस सूत्र का सिद्धान्त	४३३
१४.	चारित्र मोहनीय के आस्रव के कारण	४३३
१५.	नरकायु के आस्रव के कारण	४३५
१६.	तिर्यञ्च आयु के आस्रव के कारण	४३७
१७-१८	मनुष्यायु के आस्रव के कारण	४३८-४३९
१९.	सर्व आयुयों के आस्रव के कारण	४३९
२०-२१	देवायु के आस्रव के कारण	४४०-४४१
२२.	अशुभ नामकर्म के आस्रव के कारण	४४१
२३.	शुभनाम कर्म के आस्रव के कारण	४४२
२४.	तीर्थङ्कर नामकर्म के आस्रव के कारण	४४३
★	दर्शनविशुद्धि आदि सोलह भावनाओं का स्वरूप	४४३-४४७
★	तीर्थङ्करों के तीन भेद	४४७
★	अरहन्तों के सात भेद	४४८
★	इस सूत्र का सिद्धान्त	४४८
२५.	नीचगोत्र के आस्रव के कारण	४४९
२६.	उच्चगोत्र के आस्रव के कारण	४४९
२७.	अन्तराय कर्म के आस्रव के कारण	४५०
	उपसंहार	४५०
	अध्याय सातवाँ	
★	भूमिका	४५३
१.	व्रत का लक्षण	४५४
★	इस सूत्र कथित व्रत, सम्यग्दृष्टि के भी शुभास्रव है, बन्ध का कारण है, उनमें अनेक शास्त्राधार	४५५-४६२
★	इस सूत्र का सिद्धान्त	४६२
२.	व्रत के भेद	४६२
★	इस सूत्र कथित त्याग का स्वरूप	४६३
★	अहिंसा, सत्यादि चार व्रत सम्बन्धी	४६३-४६४
★	त्रस हिंसा के त्याग सम्बन्धी	४६४
३.	व्रतों में स्थिरता के कारण	४६४
४.	अहिंसाव्रत की पाँच भावनाएँ	४६५
५.	सत्यव्रत की पाँच भावनाएँ	४६६
६.	अचौर्यव्रत की पाँच भावनाएँ	४६७
७.	ब्रह्मचर्य व्रत की पाँच भावनाएँ	४६७
८.	परिग्रह त्याग व्रत की पाँच भावनाएँ	४६८
९-१०	हिंसा आदि से विरक्त होने की भावना	४६९
११.	व्रतधारी सम्यग्दृष्टि की भावना	४७१
१२.	व्रतों की रक्षा के लिये सम्यग्दृष्टि की विशेष भावना	४७२
★	जगत का स्वभाव	४७२
★	शरीर का स्वभाव	४७४
★	संवेग, वैराग्य, विशेष स्पष्टीकरण	४७५
१३.	हिंसा, पाप का लक्षण	४७७
★	आत्मा के शुद्धोपयोगरूप परिणाम को घातनेवाला भाव ही हिंसा है	४७७
★	१३वें सूत्र का सिद्धान्त	४७९
१४.	असत्य का स्वरूप	४७९
★	सत्य का परमार्थ स्वरूप	४७९
१५.	चोरी का स्वरूप	४८१
१६.	अब्रह्म (कुशील) का स्वरूप	४८२
१७.	परिग्रह का स्वरूप	४८३

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
१८.	व्रती की विशेषता	४८३
☆	द्रव्यलिङ्गी का अन्यथापन	४८४
☆	१८वें सूत्र का सिद्धान्त	४८५
१९.	व्रती के भेद	४८६
२०.	सागर के भेद	४८६
२१.	अणुव्रत के सहायक सात शीलव्रत	४८७
☆	तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतों का स्वरूप	४८७
☆	ध्यान में रखने योग्य सिद्धान्त	४८८
२२.	व्रती को संल्लेखना धारण करने का उपदेश	४८८
२३.	सम्यग्दर्शन के पाँच अतिचार	४८९
२४.	पाँच व्रत और सात शीलों के अतिचार	४९१
२५.	अहिंसाणुव्रत के पाँच अतिचार	४९१
२६.	सत्याणुव्रत के अतिचार	४९२
२७.	अचौर्याणुव्रत के पाँच अतिचार	४९३
२८.	ब्रह्मचर्याणुव्रत के पाँच अतिचार	४९३
२९.	परिग्रह परिमाण अणुव्रत के ५ अतिचार	४९४
३०.	दिग्व्रत के पाँच अतिचार	४९४
३१.	देशव्रत के पाँच अतिचार	४९४
३२.	अनर्थदण्डव्रत के पाँच अतिचार	४९४-४९५
३३.	सामायिक शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार	४९५
३४.	प्रोषधोपवास शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार	४९५
३५.	उपभोग परिभोगपरिमाण शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार	४९५
३६.	अतिथि संविभाग व्रत के पाँच अतिचार	४९६
३७.	संल्लेखना के पाँच अतिचार	४९६
३८.	दान का स्वरूप - करुणादान	४९८
३९.	दान में विशेषता	४९९
☆	नवधा भक्ति का स्वरूप-विधि	४९९
☆	द्रव्य, दाता और पात्र की विशेषता	५००
☆	दान सम्बन्धी जानने योग्य विशेष बातें	५०१
☆	उपसंहार	५०२
	अध्याय आठवाँ	
☆	भूमिका	५०५
१.	बन्ध के कारण	५०५
☆	बन्ध के पाँच कारणों में अन्तरङ्ग भावों की पहिचान करना चाहिए	५०६
☆	मिथ्यादर्शन का स्वरूप	५०६
☆	मिथ्या अभिप्राय की कुछ मान्यताएँ	५०९
☆	मिथ्यादर्शन के दो भेद	५०९
☆	गृहीत मिथ्यात्व के भेद - एकान्त, संशय, विपरीत, अज्ञान, विनय उनका वर्णन तथा विशेष स्पष्टीकरण	५१०-५११
☆	अविरति, प्रमाद, कषाय और योग का स्वरूप	५१४-५१५
☆	किस गुणस्थान में क्या बन्ध होता है?	५१५
☆	महापाप कौन है? इस सूत्र का सिद्धान्त	५१५-५१६
२.	बन्ध का स्वरूप	५१६
३.	बन्ध के भेद	५१९
४.	प्रकृतिबन्ध के मूल भेद (आठ कर्म के नाम)	५१९
५.	प्रकृतिबन्ध के उत्तर भेद	५२१
६.	ज्ञानावरण कर्म के ५ भेद	५२१
७.	दर्शनावरण कर्म के ९ भेद	५२२
८.	वेदनीयकर्म के दो भेद	५२२
☆	इस विषय में शङ्का-समाधान	५२२
☆	धन, स्त्री, पुत्रादि बाह्य-पदार्थों के संयोग-वियोग में पूर्वकर्म का उदय (निमित्त) कारण है। इसका आधार	५२३
९.	मोहनीय कर्म के २८ भेद	५२४
☆	अनन्तानुबन्धी का अर्थ और क्रोधादि चार कषाय का तात्त्विक स्वरूप	५२५
१०.	आयुकर्म के चार भेद	५२६
११.	नामकर्म के ४२ भेद	५२६
१२.	गोत्रकर्म के दो भेद	५२७
१३.	अन्तरायकर्म के ५ भेद	५२७
१४.	स्थितिबन्ध में ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायकर्म की उत्कृष्ट स्थिति	५२७
१५.	मोहनीयकर्म की उत्कृष्ट स्थिति	५२८

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
१६.	नाम और गोत्र की उत्कृष्ट स्थिति	५२८
१७.	आयुकर्म की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	५२८
१८.	वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति	५२८
१९.	नाम और गोत्रकर्म की जघन्य स्थिति	५२८
२०.	ज्ञानावरणादि पाँच कर्मों की जघन्य स्थिति	५२९
२१.	अनुभागबन्ध का लक्षण	५२९
२२.	अनुभागबन्ध-कर्म के नामानुसार होता है	५२९
२३.	फल देने के बाद कर्मों का क्या होता है	५३०
★	सविपाक-अविपाक निर्जरा	५३०
★	अकाम-सकाम निर्जरा	५३०
२४.	प्रदेशबन्ध का स्वरूप	५३१
२५-२६	पुण्य प्रकृतियाँ-पाप प्रकृतियाँ	५३२
★	उपसंहार	५३३ से ५३५
	अध्याय नववाँ	
★	भूमिका, संवर का स्वरूप	५३६
★	संवर की विस्तार से व्याख्या	५३६
★	ध्यान में रखने योग्य बातें	५३९
★	निर्जरा का स्वरूप	५४१
१.	संवर का लक्षण	५४३
२.	संवर के कारण	५४५
★	गुप्ति का स्वरूप	५४५
३.	निर्जरा और संवर का कारण	५४६
★	तप का अर्थ-स्वरूप और उस सम्बन्धी होनेवाली भूख	५४७
★	तप के फल के बारे में स्पष्टीकरण	५४८
४.	गुप्ति का लक्षण और भेद गुप्ति की व्याख्या	५४९
५.	समिति के पाँच भेद उस सम्बन्ध में होनेवाली भूख	५५०-५५२
६.	उत्तम क्षमादि दस धर्म उस सम्बन्ध में होनेवाली भूल	५५३-५५४
★	दस प्रकार के धर्मों का वर्णन	५५५-५५७
७.	बारह अनुप्रेक्षा	५५७-५६१
८.	परीषह सहन करने का उपदेश	५६१-५६४
९.	परीषह के २२ भेद	५६४
★	परीषहजय का स्वरूप	५६५-५६८

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
★	इस सूत्र का सिद्धान्त	५६८-५७०
१०.	दसवें से बारहवें गुणस्थान तक की परीषह	५७०
११.	तेरहवें गुणस्थान में परीषह	५७२
★	केवली भगवान को आहार नहीं होता, इस सम्बन्ध में स्पष्टीकरण	५७३-५७६
★	कर्मसिद्धान्त के अनुसार केवली के अन्नाहार होता ही नहीं	५७६
★	सूत्र १०-११ का सिद्धान्त और ८वें सूत्र के साथ उसका सम्बन्ध	५७७
१२.	६ से ९वें गुणस्थान तक की परीषह	५७७
१३.	ज्ञानावरण-कर्म के उदय से होनेवाली परीषह	५७८
१४.	दर्शनमोहनीय तथा अन्तराय से होनेवाली परीषह	५७८
१५.	चारित्र मोहनीय से होनेवाली परीषह	५७८
१६.	वेदनीय कर्म के उदय से होनेवाली परीषहें	५७९
१७.	एक जीव के एक साथ होनेवाली परीषहों की संख्या	५७९
१८.	चारित्र के पाँच भेद और व्याख्या	५८१
★	छट्ठे गुणस्थान की दशा, चारित्र का स्वरूप	५८२-८३
★	चारित्र के भेद किसलिये बताये ?	५८३
★	सामायिक का स्वरूप, व्रत और चारित्र में अन्तर	५८४-८५
★	निर्जरा तत्त्व का वर्णन	५८५
१९.	बाह्यव्रत के ६ भेद-व्याख्या	५८६
★	सम्यक्तप की व्याख्या	५८८
★	तप के भेद किसलिये हैं ?	५८९
२०.	अभ्यन्तर तप के ६ भेद	५८९
२१.	अभ्यन्तर तप के उपभेद	५९०
२२.	सम्यक् प्रायश्चित के ९ भेद	५९१
★	निश्चय प्रायश्चित का स्वरूप	५९३
★	निश्चय प्रतिक्रमण-आलोचना का स्वरूप	५९३
२३.	सम्यक् विनय तप के चार भेद	५९३
★	निश्चय विनय का स्वरूप	५९३

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
२४.	सम्यक् वैयावृत्य तप के १० भेद	५९३
२५.	सम्यक् स्वाध्याय तप के पाँच भेद	५९४
२६.	सम्यक् व्युत्सर्ग तप के भेद	५९५
२७.	सम्यक् ध्यान तप का लक्षण	५९६
२८.	ध्यान के भेद	५९७
२९.	मोक्ष के कारणरूप ध्यान	५९८
३०-३३	आर्त्तध्यान के भेद	५९८-९९
३४.	गुणस्थान अपेक्षा आर्त्तध्यान के स्वामी	५९९
३५.	रौद्रध्यान के भेद और स्वामी	६००
३६.	धर्मध्यान के भेद	६००
३७.	शुक्लध्यान के स्वामी	६०२
३८.	शुक्लध्यान के चार भेदों में से बाकी के दो भेद किसके हैं ?	६०३
३९.	शुक्लध्यान के चार भेद	६०३
४०.	योग अपेक्षा शुक्लध्यान के स्वामी	६०३
☆	केवली के मनोयोग सम्बन्धी स्पष्टीकरण	६०४
☆	केवली के दो प्रकार का वचनयोग	६०५
☆	क्षपक तथा उपशमक के चार मनोयोग तथा वचनयोग का स्पष्टीकरण	६०५
४१-४२	शुक्लध्यान के प्रथम दो भेदों की विशेषता	६०६
४३.	वितर्क का लक्षण	६०६
४४.	वीचार का लक्षण	६०७
☆	व्रत, गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहजय, बारह प्रकार के तप आदि सम्बन्धी खास ध्यान में रखने योग्य स्पष्टीकरण	६०८-६१०
४५.	पात्र अपेक्षा निर्जरा में होनेवाली न्यूनाधिकता	६१०
४६.	निर्ग्रन्थ साधु के भेद	६१२
	परमार्थ निर्ग्रन्थ-व्यवहार निर्ग्रन्थ	६१३
४७.	पुलाकादि मुनियों में विशेषता	६१४
	उपसंहार	६१७-६२१
	अध्याय दसवाँ	
☆	भूमिका	६२२
१.	केवलज्ञान की उत्पत्ति का कारण	६२२
☆	केवलज्ञान होते ही मोक्ष क्यों नहीं होता ?	६२४
२.	मोक्ष के कारण और उसका लक्षण	६२६
☆	मोक्ष यत्न से साध्य है	६२७
३-४	मोक्षदशा में कर्मों के अलावा किसके अभाव होता है ?	६२८
५.	मुक्त जीवों का स्थान	६२९
६.	मुक्त जीव के ऊर्ध्वगमन का कारण	६३०
७.	सूत्र कथित ऊर्ध्वगमन के चारों कारणों के दृष्टान्त	६३०
८.	लोकाग्र से आगे नहीं जाने का कारण	६३१
९.	मुक्त जीवों में व्यवहारनय की अपेक्षा से भेद	६३२
☆	उपसंहार-मोक्षतत्व की मान्यता सम्बन्धी होनेवाली भूल और उसका निस्तारण	६३५
☆	अनादि कर्मबन्धन नष्ट होने की सिद्धि	६३६
☆	आत्मा के बन्धन की सिद्धि	६३९
☆	मुक्त होने के बाद फिर बन्ध या जन्म नहीं होता	६३९
☆	बन्ध जीव का स्वाभाविक धर्म नहीं	६४०
☆	सिद्धों का लोकाग्र से स्थानान्तर नहीं होता	६४०
☆	अधिक जीव थोड़े क्षेत्र में रहते हैं	६४१
☆	सिद्ध जीवों के आकार	६४१
☆	परिशिष्ट-१ ग्रन्थ का साराँश	६४३
☆	मोक्षमार्ग का दो प्रकार से कथन	६४३
☆	व्यवहारमोक्षमार्ग साधन है इसका क्या अर्थ ?	६४४
☆	मोक्षमार्ग दो नहीं	६४४
☆	निश्चयमोक्षमार्ग का स्वरूप-व्यवहारमोक्षमार्ग का स्वरूप	६४४-६४५
☆	व्यवहार मुनि का स्वरूप, निश्चयी मुनि का स्वरूप, निश्चयी के अभेद का समर्थन	६४५
☆	निश्चय रत्नत्रय की कर्ता, कर्म, करण और सम्प्रदान के साथ अभेदता	६४७
☆	अपादान और सम्बन्ध, आधार, क्रिया और गुणस्वरूप के साथ अभेदता	६४८
☆	निश्चयरत्नत्रय की पर्याय, प्रदेश और	

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	अगुरुलघु स्वरूप के साथ अभेदता	६४९
☆	उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूप की अभेदता	६५०
☆	निश्चय-व्यवहार मानने का प्रयोजन	६५०
☆	तत्त्वार्थसार ग्रन्थ का प्रयोजन	६५१
☆	इस ग्रन्थ के कर्ता पुद्गल हैं आचार्य नहीं	६५१
☆	**परिशिष्ट - २**	**६५३**
☆	प्रत्येक द्रव्य और उसके प्रत्येक समय की पर्याय की स्वतन्त्रता की घोषणा	६५३
☆	**परिशिष्ट - ३**	**६५५**
☆	साधक जीव की दृष्टि को मापने की रीति	६५५
☆	अध्यात्म का रहस्य	६५७
☆	वस्तुस्वभाव और उसमें किस ओर झुके ?	६५७
☆	**परिशिष्ट - ४**	**६५८**
☆	शास्त्र का संक्षिप्त सार	६५८